वाच्य

↳ वाच्य का शाब्दिक अर्थ → बोलने का ढंग/तरीका

परिभाषा :→ जिस वाक्य में क्रिया को करने वाले कर्ता, कर्म, भाव की पहचान होती है, वह 'वाच्य' कहलाता है।

वाच्य के भेद → तीन भेद

1. कर्तृ वाच्य (कर्त्ता) → ने, शून्य विभक्ति (नहीं होगी)
2. कर्म वाच्य (कर्म) → कर्त्ता निर्जीव, यदि कर्ता सजीव → के द्वारा
3. भाव वाच्य (भाव) → कर्त्ता (से), नकारात्मक/एकवचन
   ✓ अन्यपुरुष

उदाहरण:

(1) राम ने आम खाया। (कर्तृ वाच्य)
(2) पेन चलाया गया। (कर्म वाच्य)
(3) इससे बैठा नहीं जाता। (भाव वाच्य)
(4) गाड़ी चल रही है। (कर्म वाच्य)
(5) रोगी से घूमा नहीं जाता। (

कर्तृ वाच्य- जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता होती है और कर्त्ता के ने विभक्ति मिलती है, नहीं भी मिलती है।

1. शीतल ने पत्र लिखा। (किसने, क्या)
2. राम ने सेब खाया।
3. रूचि पढ़ रही है।

कर्म वाच्य- जिस वाक्य में कर्म की प्रधानता होती है और कर्ता निर्जीव भी होता है तथा सजीव कर्ता के द्वारा लगा होता है।

1. पत्र लिखा गया।
2. कहानी सुनाई गई।
3. किसान के द्वारा खेत जोता गया।
4. माता जी के द्वारा भजन सुना गया।
5. बल्ब जलाया गया

भाव वाच्य - जिस वाक्य में भाव की प्रधानता होती है और कर्ता के बाद (से) का प्रयोग किया जाता है।

अन्य पुरुष / एकवचन / नकारात्मकता का बोध होता है।

* दादी से चला नहीं जाता।
* रोगी से बैठा नहीं जाता।
* सर्दी में उससे पढ़ा नहीं जाता।
* मोहन से काम नहीं आता।

Q चाय खदक रही है, वाक्य में कौन-सा वाच्य का प्रयोग हुआ—

(A) कर्तृवाच्य
(B) कर्मवाच्य [✓]
(C) भाववाच्य
(D) इनमें से कोई नहीं